वेदों की खुशबू ओ३म् वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 88	Year 10	Volume 6	June 2020 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

एक आशा रखें– यह भी गुजर जायेगा

कोरोना का कहर सारे विश्व में छाया हुआ है। अमेरिका व योरप के देश इस सें ऐशिया द्वीप के देशों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावित है। जिन्ह विकसित देश माना जाता है और जहां स्वास्थय सेवायें हमारे से कहीं अधिक हैं , वहां भी इसे रोकना असम्भव जैसा प्रतीत हो रहा है। अभी तक इस के प्रभाव से सारी दुनिया में तीन लाख से अधिक व्यक्ति अपनी जान गवा बैठें हैं जब कि भारत में यह संख्या दस हजार के लगभग है। इस मर्ज की कोई सफल दवाई अभी तक सामने नहीं आई हैं। ऐसे में हमारे सामने दो ही रास्ते हैं। पहला––भयभीत होकर निराश हो कर चिन्तित रहें व अपने आप को दुखी करते रहें। चिन्ता का कारण है––मृत्यु का भय ।

दूसरा ढंग है––एक आशा को लेकर चलें ––––यह भी गुजर जायेगा। बात अधिक पुरानी नहीं। सौ साल पहले तक पलेग चेचेक व हैजा से ही लाखों व्यक्ति मर

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
 # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

जाया करते थे। भारत में ऐसा होता ही रहता था। हम सब ने पढ़ा कि 1918 में सपेनिश फलयू आया तो दो करोड़ व्यक्ति इस बिमारी ने निगल लिये। भारत में पलेग व हैजा जैसी महा बिमारियां आती ही रहती थी। करोना में तो मौत की दर सिर्फ 3 प्रतिशत है जब कि उन बिमारियों में 90 प्रतिशत होती थी व घन्टों व मिन्टों में ही व्यक्ति मर जाया करता था। गांव कं गाव खत्म हो जाते थे। शमशान पर ले जाने वाला भी कोई नहीं रहता था। उन सब भयानक कहे जाने वालें रोगों की वैकसिन व दवाई भी बनी और आज यह बिमारियां लगभग खत्म हो गई है। कहने का अर्थ यह है कि एक आशा को लेकर चलें––––यह भी गुजर जायेगा।

कहतें है जहां आशा नहीं होती वहां कुछ भी नहीं रहता, यहां तक कि लोग भी खत्म हो जाते है और जब आशा होती है तो सब कुछ कायम रहता है। कठिन समय में भी, इस आशा की किरण का एक बहुत सरल उपाय है––––**ईश्वर में यह अटूट विश्वास की वह कल्याणकारी है, सब का भला ही करता है व मेरा भी भला ही करेगा। यर्जु वेद का यह मन्त्र–––ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कराय च, नमाः शिवाय च शिवतराय च ।।** इसी भाव को बता रहा है।

नमस्कार कल्याण स्वरूप,
नमस्कार सुखों के दाता,
नमस्कार हो शाति दाता,
नमस्कार सौ बार,

ईश्वर को शिव कह कर सम्भोदित किया गया है जिसका अर्थ है कल्याणकारी।

आज से लगभग 75 वर्ष पूर्व जब भारत का विभाजन हुआा तो एक अनुमान के अनुसार 60 लाख व्यक्ति इस दौरान मारे गये , 5 करोड़ के लगभग दोनों समुदायों के लोग अपना घर बार व धन्धा छोड़ कर नये स्थान पर कैम्पों में रहने पर और छोटे मोटे धन्धे करने पर मजबूर हो गये। परन्तु 50 साल बाद उन्हीं विस्थापित व्यक्तियों के पास घर बार, अच्छे व्यापार व नौकरिया सब कुछ वापस आ गये, कारण उन्होने अच्छे दिन वापस आने की उम्मीद को खोया नहीं और मेहनत करने में लगे रहे। कुछ ऐसे जो नुकसान का दुख ही मनाते रहे उनके लिये दुख की रात लम्बी ही होती गई।

जब हमारे किसी प्रियजन की मृत्यु हो जाती है तो मृत्ये वाले दिन, घर में का महौल बहुत दुख का होता है। सभी परिवार के लोग विलाप करते नजर आते है, परन्तु यदि आप 10 दिन बाद उसी घर में जायेंगे तो आप को शायद यह मालुम ही न हो कि 10 दिन पहले यहां कोई मौत हुई थी। कारण, दुख को भुलाकर आगे बड़ना ही जीवन है। पिछले दो महीनो में हमारे दो करोड़ के लगभग दूसरे प्रान्तों से काम पर आये मजदूरों को बहुत ही खराब समय का सामना करना पड़ा। इन में लाखों मजदूर सैकंड़ो कीलोमीटर अपने परिवार की महिला सदस्यों व छोटे बच्चों के साथ चलने पर मजबूर हो गये और हजारों ही मारे गये। इस में कोई दो राय नहीं कि प्रशासन की इस में बहुत गलतियां हैं परन्तु एक मुख्य कारण यह हुआ कि मजदूर लोग रेल गाड़ियो वं बसों का काफी समय तक बन्द रहने के कारण यह आशा खो बैठे कि वे अपने घर कभी बापिस भी पहुंचंगे। एक साल के अन्दर ही आप देखेंगे कि यही मजदूर पहले से अधिक ,शक्तिशाली हो कर उभरेंगे। प्रशासन को भी उनके प्रति अपने रवैये को बदलना पड़ेगा और जो आर्थिक सुरक्षा आज केवल सरकार में काम करने वालों को ही उपलब्ध है उसका कुछ अंश इन्हें भी देना पड़ेगा। रात के अन्धेरे के बाद वह सुवह कभी तो आयेगी, ऐसा सोचने से जीवन आगे बड़ सकता है।

नीला सूद

कृप्या ध्यान दे ।

हम आपको लोकडाउन व दूसरे कारणों से वैदिक थोटस के चार संस्करण आप तक नहीं पहुंचा सके। हमें खेद है। आपको इन चार महीनों का खुलक नहीं देना है। इस कारण जिन का शुल्क आया हुआ है व जनवरी २०२० से ओं तक था वह चार महीने आगे तक माना जायेगा। उदाहरण के लिये अगर शुल्क फरवरी २०२० तक था जो अ बवह जून २०२० तक होगा। धन्याबाद।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

मुक्ति का साधन इन्द्रिय-संयम

प्रियांशु सेठ

एक मित्र ने शंका रखी है कि क्या इन्द्रिय–संयम अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन जीवन में अनिवार्य है? यहाँ इस शंका का समाधान किया जा रहा है। वेदादि सत्य शास्त्रों ने मोक्ष–मार्ग के पथिक के लिए ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य बताया है। एक साधक के लिए इन्द्रिय–संयम उसीप्रकार आवश्यक है, जैसे किसी वृक्ष के लिए जल। यदि वृक्ष को जल न मिले तो वह सूखकर मर जाता है, उसी प्रकार यदि साधक इन्द्रिय–संयम न करे, तो वह शारीरिक व मानसिक भोग–विलासों का भागी बनता है।

मनु महाराज कहते हैं– "इन्द्रियों की दासता से, निश्चय ही दोष को प्राप्त होता है। इन पर संयम करने से ही सफलता प्राप्त होती है । इन्द्रियां मुक्ति तक नहीं पहुंचती बल्कि आत्मा को मुक्ति मिलती है। इन्द्रियां तो मात्र साधन हैं और आत्मा इनका स्वामी।

कठ–उपनिषद् में इसे एक सुन्दर अलंकार से समझाया गया है– "यह शरीर एक रथ के सदृश है। इसका स्वामी आत्मा है, वह रथी है, बुद्धि आत्मा की सारथी है व मन लगाम है, इन्द्रियां घोड़े हैं और इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं, जिन पर इन्द्रियां रूपी घोड़े दौड़ते हैं। मनीषी व्यक्ति आत्मा, इन्द्रियां और मन इन्हें मिलाकर मन इन्हें मिलाकर भोक्ता कहते हैं।"

पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, पांच कर्मेन्द्रियाँ और ग्यारहवां मन– ये सब आत्मा के वाहन हैं। इनको सांसारिक विषय में केन्द्रित करने पर साधक मुक्ति को कभी प्राप्त नहीं हो सकता। मुक्ति प्राप्त करने के लिए उसे इन सबको स्वयं के अधीन करके ईश्वर–चिन्तन पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। यम ऋषि कहते हैं– "शरीर में इन्द्रियों के विषय रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द– सूक्ष्म हैं। इन्द्रियां तो दिखाई देती हैं, पर ये विषय दिखाई नहीं देते। इन विषयों की अपेक्षा मन

सूक्ष्म है और मन की अपेक्षा बुद्धि सूक्ष्म है। बुद्धि की अपेक्षा यह आत्मा महान् है, दूर है और अति सूक्ष्म है।" इन इन्द्रियों को वश में कैसे करना चाहिए?

महर्षि मनु कहते हैं– "इन इन्द्रियों को केवल विषयों की सेवा में न लगाने से ही वश में नहीं किया जा सकता। निरन्तर ज्ञान प्राप्ति ही इसका सर्वोत्तम उपाय है।"

मनु ने जितेन्द्रिय मनुष्य के लक्षण इस प्रकार बताए हैं– "जो व्यक्ति सुनकर, छूकर, देखकर, खाकर, सूंघकर न हर्ष करता है और न शोक करता है, वही जितेन्द्रिय जानना चाहिए।" मनु घोड़े की उपमा देकर इन्द्रिय–संयम का उपाय बताते हैं– "जैसे सारथि घोड़े को कुपथ में नहीं जाने देता, वैसे ही विद्वान् ब्रह्मचारी आकर्षण करने वाले विषयों में जाते हुए इन्द्रियों के रोकने में सदा प्रयत्न किया करे।"

महर्षि पतंजलि के शब्दों में– "अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः" अर्थात् अभ्यास और वैराग्य के द्वारा चंचल मन को, चित्त की वृत्तियों को रोकना चाहिए ।

इन्द्रिय–संयम के विषय में यम ऋषि के वचन बड़े ही मार्मिक हैं– "जिसने रथ रूपी शरीर की इन्द्रियों के वास्तविक रूप को जान लिया है और जिसका मन सदा आत्मा के अधीन रहता है, इन्द्रियां उसी के वश में रहती हैं, जैसे अच्छे घोड़े सारथि के काबू में रहते हैं।" आगे ऋषि कहते हैं– "श्रेय मार्ग के पथिक को चाहिए कि वह अपने मन और वाणी को विषयों से रोके और फिर उनको अपनी बुद्धि में स्थिर करे, उस बुद्धि को महान् आत्मा में स्थित करे, फिर आत्मा को शान्त परमात्मा के साथ जोड़े।" –

ऋषि ने आत्म–विकास के तीन क्रम बताए हैं– ज्ञानात्मा, महानात्मा और शान्तात्मा। इन्द्रियों की इस सहज चंचलता को दृष्टि में रखते हुए वेद में भक्त बड़ी विनम्रता से प्रभु से प्रार्थना करता है–

ओण्म्। इमामि यानि पंचेन्द्रियाणि मनः
षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि। यैरेव ससृजे घोरं
तैरेव शान्तिरस्तु सः।। –अथर्व.

अर्थात् ये जो पांच इन्द्रियां हैं और जिनके साथ छठा मन है, ईश्वर कृपा से जिनका तीव्रता के साथ मेरे हृदय में स्थान है, जिनके द्वारा ही भयंकर कार्य किये जाते हैं, इन इन्द्रियों और मन के द्वारा ही हमें शान्ति प्राप्त हो।

यहां एक प्रश्न पैदा होता है कि जब इन इन्द्रियों द्वारा इतने भयंकर परिणामों की सम्भावना है और ये बार–बार कुमार्ग की ओर प्रेरित करती है, तब क्यों न इसका नाश कर दिया जाए? "न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी" कुछ लोग ऐसा ही कहते और मानते हैं। इतिहास में ऐसी कई घटनाएं मिलती हैं जहां इस भ्रान्त धारणा का शिकार हो व्यक्ति ने अपनी किसी इन्द्रिय का नाश ही कर दिया।

बौद्ध इतिहास की घटना है। एक युवक बौद्ध भिक्षु किसी गृहस्थ के घर भिक्षा मांगने गया। विहार वहां एक रूपवती कन्या को देखकर मुग्ध हो गया और कन्या भी उस युवक की ओर विशेष आकृष्ट हो गयी। भिक्षु ने बिहार में वापस आकर, अपनी इस मानसिक निर्बलता का वर्णन अपने गुरु से किया। उसने भिक्षु को आदेश दिया कि वह अपनी दोनों आंखें फोड़ दे। शिष्य ने गुरु के आदेश का तत्काल पालन किया। पर क्या यह समुचित कहा जा सकता है?

क्या आंख फोड़ देने मात्र से उस रूपवती कन्या का ध्यान उसके मन से निकल जाएगा? मानसिक वासना तो फिर भी रहेगी।

सूरदास का पछतावा हिन्दी के सुविख्यात कवि और लेखक श्री रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक "कविता कौमुदी" में सूरदास कवि का परिचय देते हुए लिखा है– "सूरदास जन्म के अन्धे न थे। ऐसी कहावत है कि एक बार ये एक युवती को देखकर उस पर मुग्ध हो गए। उसकी ओर एकटक ताकते हुए ये बहुत देर तक खड़े रहे। अन्त में वह युवती इनके पास स्वयं आयी और कहने लगी– 'महाराज, क्या आज्ञा है?' सूरदास को उस समय अपनी स्थिति पर बड़ी लज्जा आयी। इन्होंने यह दोष आंखों का समझकर उस युवती को कहा कि 'यदि तुम मेरी आज्ञा मानती हो, तो सुई से मेरी दोनों आंखें फोड़ दो।' युवती ने आज्ञानुसार ऐसा ही किया। तब से सूरदास अन्धे हो गए। भक्तमाल में लिखा है कि सूरदास जन्म के अन्धे थे। परन्तु इस पर सहसा विश्वास नहीं होता, क्योंकि इन्होंने अपनी कविता में रंगों का, ज्योति का और अनेक प्रकार के हाव–भावों का ऐसा यथार्थ वर्णन किया है जो बिना आंखों से देखे, केवल सुनकर, नहीं किया जा सकता।" ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी आंखों का इस प्रकार विनाश करके सूरदास को जीवन में पछतावा भी हुआ। वे अपने एक पद में कहते हैं–

ऊधो! अँखियां अति अनुरागी।
इक टक मग जोवति उरु रोवति भूलेहु पलक न लागी।।

वैदिक धर्म में इन्द्रियों को कहीं भी गर्हित नहीं माना गया है। स्वयं "इन्द्रिय" शब्द ही बड़ा अर्थपूर्ण है। इसकी धातु है "इदि परमैश्वर्य"। इस धातु से "रन्" प्रत्यय होकर "इन्द्र" शब्द सिद्ध होता है। इसका अर्थ है "य इन्दति परमैश्वर्यवान भवति स इन्द्रः"। जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है, इससे परमात्मा का नाम "इन्द्र" है। इस "इन्द्र" शब्द से ही निपातनात् घञ् प्रत्यय होकर "इन्द्रिय" बनता है, जिसका अर्थ है कि जो ईश्वर प्राप्ति के लिए सहायक है।

क्हते हैं ईश्वर ने मिस्र देश की जनता के उपर पलेग बिमारी के सात आक्रमण किये और आखिर में वहां के अंहकारी राजा जिसका नाम फारोह था, उसे किसी सन्त के कहने पर इजराईल के लोगों को जिन्हें उसने बन्धक बना कर रखा था, मुक्त करना पड़ा व इस तरह मिस्र की जनता को पलेग जैसी जानलेवा बिमारी से छुटकारा मिला।

PROPERTY FOR SALE

Ist Floor of a 1 Kanal Corner House in Sector-35 Chandigarh, facing Park, 2BHK with Annnnexe, newly renovated, ready to move.
Contact—9878595377 email-madan.mohindra@outlook.com

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

भारत ने सदा जीवन मूल्यों को महत्व दिया है

हजारी प्रसाद द्विवेदी

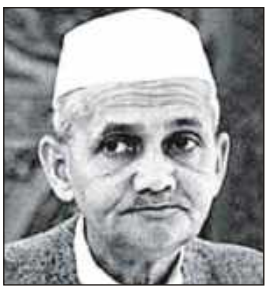

एक बहुत बड़े आदमी ने एक बार मुझ से कहा था किइस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता । जो कुछ करेगा लोग उस में दोष ढूंढने लगेंगे। स्थिती अगर ऐसी ही है तो चिंता की बात है। क्या यह वही भारत है जिस का सपना तिलक और गांधी ने देखा था। रवीन्द्र नाथ ठाकुर और मदन मोहन मालविय का महान संसकृति सभय भारत किस अतीत के गहवर में डूब गया है। आर्य, द्रविड़, हिन्दु, मुसलमान युरोपिय व भारतीय आदर्शो की मिलन भूमी का महासमुन्द्र क्यों सूखता जा रहा है। मेरा मन कहता है, ऐसा नहीं हो सकता। भारत हमारे महान मनीषियों की भूमी है, इस का अस्तित्व खत्म नहीं हो सकता। इन दिनों कुछ ऐसा महौल बन रहा है कि ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समण जाने लगा है। सच्चाई केवल भीरू और बेवस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसे में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था भी हिलने लगी हैं ।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक बस्तुओं के संग्रह को बहुत महत्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव में बैठा हुआ हैवही चरम और परम है। लोभ–मोह, काम–क्रोद्ध आदि विचार मनुष्य में स्वभाविक रूप से विद्यमान रहते है, पर इनहें प्रधान–शक्ति मान लेना और अपने मन और बुद्धि को उनके ईशारे पर ही छोड़ देना, बुरे आचरण की और ले जा सकता है। भारतवर्ष ने ऐसे आचरण को कभी उचित नहीं माना, हमारी संसकृति ने उन्हें संयम में बांध कर रखने को कहा है। परन्तु यह भी सत्य है कि भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिये दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर लाने के लिये उपाय की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह कि इस देश के कोटि–कोटि दरिद्रजना की हीन अवस्था को दूर करने के लिये ऐसे कई कायदे कानून बनाये गयेंहैं जो कृषि, उद्योग, वाण्जिय, शिक्षा और स्वास्थय की स्थिती को अधिक उन्नत और सुचारू वनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परन्तु जिन लोंगों ने इनक कार्यो को अमल देना है, उनके मन पवित्रा रहने के स्थान पर कुअिलता की और भागते है। वे लक्ष्य को भूल कर अपने फायदे की और लग जाते हैं। भारतवर्ष कानून को सदा धर्म में देखता आया है। आज ऐका ऐक धर्म और कानून में अन्तर कर दिया गया हैं।धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता कानून को दिया जा सकता हैं। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरू हैं व कानून की त्रुटियों का लाभ उठाने से संकोच नहीं करतें। इस बात के परयाप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि उपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और सच्चाई के मूल्य बने हुये है। वे दब अवश्य गये हैं, परन्तु नष्ट नहीं हुए। आज भी मनुष्य मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है। झूठ और चोरी को गलत समझाा जाता है, दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में पाप समझा जाता है। भ्रष्टाचार के प्रति आक्रोश यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैंध् जो गलत ढंग से धन या मान संग्रह करना चाहते है।

मनुष्य की बनाई विधियां गलत नतिजें तक पहुंच रही हैश तो इन्हें बदलना होगा वस्तुतः इन्हें बदला ही जा रहा है, आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष बनाने की आशा बनी ही रहेगी।

Human Relations Were Put To Test By Covid-19, As Never Before

Neela Sood

Kartar Singh Lehari

An eighty years old woman, who had returned from Maharashtra to her home in Hyderabad was greeted with doors of the house shut for her . Children refused her entry on the pretext that she could be a potential source of coronavirus. Her children may appear to be right for many of us but then we will do well to remember that a mother takes bigger risk to her life when she delivers a baby after carrying her for nine months in her womb. They could have got her tested and used all safeguards but shutting the doors of her own house tells how cruel and insensitive we can be when it comes to our own safety.

Eight such unattended corpses were lying in the morgue of a hospital in Maharashtra for which no family member came for their final rites. In the last two months there have been three such instances in Punjab where children refused to receive the body of their kin from the hospital authorities for the final rites.But then we can't ignore that after all somebody on duty must have taken those for cremation. For example, in one particular case, when the kin refused, it was left to the local Patwari Mr Kartar Singh Lehari to receive the body from the hospital authorities for the final rites. Then in New Delhi, a class 12 student , aspiring to study medicine , has taken up the job of handling bodies of COVID-19 patients to provide for his siblings school fees and mother's treatment. Mr Kartar Singh Lehari who volunteered to cremate bodies of people who died of the disease has cremated 21 bodies of Covid 19 patients till date. According to Lehri, there is no higher form of service to humanity than giving a dignified send off to people rejected by their own. He is also a human like us and coronavirus does not make any distinction between human beings . If we can spend thousands on final rites and uthala rasam and costly shawls for putting on the dead body, we can very well buy a PPE kit also as a safeguard, to perform the final rites which is not only our moral duty but ordained in our respective religions also. This sort of behavior is not only confined to cremation but there are instances where people even refused to accompany the corpse to the cremation ground., according to Mr Kartar Singh Lehari.

Another very funny but shocking development took place. The family members indeed took the delivery of the corpse from the hospital authorities but abandoned that on the road, at a distance of one KM from the hospital. Later a few people gathered to perform the last rites.

As a woman I know one thing that neither any wife will allow her husband's corpse to be given such treatment nor any mother can accept her child's dead body being handled like that of an unclaimed person then how we can allow our concern for person safety to take precedence over our moral duty when it comes to other relations. Are not the doctors and other para medical persons putting their sense of duty over their personal safety? If Mr Lehari is doing it for strangers the least we can do is to do it for those who are our kin. Even I know that a dead body without life is like a lump of mud but then it has in it the feelings of life long association and it deserves to be treated with love and affection. It is not for nothing that our law also mandates respectful burial of the dead and that can be most befitting if done by the kin.

हिन्दुओं का बड़ा दुर्भाग्य – उन्होंने गान्धी को अपना संरक्षक मान लिया (2)

कृष्ण चन्द्र गर्ग

दुर्गा दास एक प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक थे। उन्होंने एक पुस्तक लिखी है – **'India From Curzon to Nehru and After'** उस पुस्तक में वे लिखते हैं :–

सन 1946 में कांग्रेस ने अविभाजित भारत को पन्द्रह प्रदेशों में बांटा हुआ था। हर प्रदशे में एक कांग्रेस कमेटी थी। उन कांग्रेस कमेटियों को पत्र लिखकर पूछा गया कि स्वतन्त्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री कौन बने। सब ने लिफाफों में बन्द करके अपनी अपनी कमेटी के निर्णय भेजे। उनमें 12 प्रदेश कांग्रेस कमेटियों के निर्णय सरदार बल्लभ भाई पटेल के पक्ष में थे, दो आचार्य कृपलानी के पक्ष में और एक पट्टाभि सीतारमैया के पक्ष में था। नेहरू के पक्ष में कोई एक भी मत न था। फिर भी गान्धी ने प्रजातन्त्र का गला घोटकर वह ताज जवाहर लाल नेहरू के सिर पर रख दिया। जब पत्रकार दुर्गा दास ने गान्धी से पूछा कि बहुमत तो सरदार पटेल के पक्ष में है तो फिर आपने नेहरू को कैसे बना दिया। गान्धी का जवाब था 'नेहरू ज्यादा अच्छी अंग्रेजी बोलता है'। यह हिन्दुओं के साथ गद्दारी थी क्योंकि सरदार पटेल हिन्दूवादी नेता थे और नेहरू मुस्लिमप्रस्त था।

हिन्दू नेताओं के प्रति 29 मई 1924 के 'यंग इंडिया' पत्रिका में गांधी ने अपने विचार लिखे – मुझे पण्डित मदनमोहन मालवीय से सावधान किया गया है। सन्देह है कि उनके कोई गुप्त इरादे हैं। कहा जाता है कि वे मुसलमानों के मित्र नहीं हैं। .... दूसरा व्यक्ति जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता वह है लाला लाजपत राय। .... स्वामी श्रद्धानंद पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता।

गान्धी ने सन् 1921 में मुसलमानों के विशुद्ध मजहबी (खिलाफत) आन्दोलन में हिन्दुओं को घसीटा। खिलाफत आन्दोलन के नाम पर मालावार (केरल) में मोपला मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अथाह अत्याचार किए। सरकारी आंकड़ों के अनुसार कम से कम 10,000 निर्दोष हिन्दू कत्ल कर दिए गए।

डा. अम्बेडकर ने मोपला मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर किए अत्याचारों को खून जमाने वाला और अवर्णनीय बताया था। परन्तु गान्धी की बेशर्मी की हद देखिए, उन्होंने कातिल मोपला मुसलमानों को बहादुर और ईश्वर से डरने वाले बताया था। उन्होंने कहा था – ष्ठतंअम ळवक मिंतपदह डवचसें ीव मतम पिहीजपदह वित ींज जीमल बवदेपकमतें तमसपहपवद ंदक पद ं उंददमत ूीपबी जीमल बवदेपकमतें तमसपहपवनेष अर्थात ईश्वर से डरने वाले

बहादुर मोपला वही लड़ाई लड़ रहे थे जिसे वे अपने मजहब के अनुसार उचित समझते थे। इस नरसंहार के लिए पूरी तरह गान्धी जिम्मेदार थे क्योंकि उन्होंने हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफत आन्दोलन में घसीटा था।

गान्धी ने हिन्दुओं को आश्वासन दिया था कि वे पाकिस्तान न बनने देंगे, अगर बना तो उनकी लाश पर बनेगा। पाकिस्तान तो बना पर गान्धी की लाश न बिछी। गान्धी ने विभाजन के खिलाफ अनशन भी नहीं किया क्योंकि वे जानते थे कि पाकिस्तान लिए बिना जिन्नाह मानेगा नहीं और भूख से उनकी मृत्यु हो जाएगी। जिन हिन्दुओं ने गान्धी पर विश्वास किया वे पाकिस्तान में रह गए और मुसलमानों द्वारा कत्ल कर दिए गए।

विभाजन के समय हुए रक्तपात के लिए भी गान्धी ही जिम्मेदार हैं। जिन्नाह ने कहा था कि पहले आबादी की अदला बदली कर ली जाए बाद में सेना और पुलिस का बंटवारा किया जाए। यही सुझाव डॉ. अम्बेडकर तथा सरदार पटेल ने दिया था। अंग्रेज सेनापतियों ने सलाह दी थी कि पाकिस्तान क्षेत्र से सभी हिन्दुओं को भारतीय क्षेत्र में ले आने के बाद ही सेना का विभाजन किया जाए। परन्तु गान्धी और नेहरू नहीं माने, उन्होंने कहा कि जो जहां रह रहा है वहीं रहेगा।

कृष्ण चन्द्र गर्ग

0172–4010679

kcg831@yahoo.com

सम्पादक की टिपन्नी

गर्ग साहब आप के विचारों का मैं आदर करता हूं। परन्तु यह आवश्यक नहीं की सरदार पटेल का शासन अच्छा ही होता। सरदार पटेल के दो महान अनुयाई व प्रशंसको का शासन हम देख ही रहें है।

पुस्तक

(English Book of short stories---Our Musings)

(English Book of short stories---Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका पुस्तक की कीमत 150 रूपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो व ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

Editorial

Where did government falter -------Covid-19 induced lockdown ?
Arbitrary and unplanned lockdown did more harm than Covid-19

During Covid -19 induced Lock down, country witnessed the greatest human tragedy since partition of the country in 1947. One important section of our society has suffered body blow to their life and dignity both, millions of them got uprooted, lost livelihood and above all were subjected to human misery whose only parallel was the post partition pain and loss of life & property suffered by the displaced. To avoid its reoccurrence it is very important to analyze where government erred in last two months as things have not gone well, be it migrant labor, employees working in informal sector especially tourism and hospitality sector, business, small businessman, industry or economy as a whole.

This type of lock down, which had tougher restrictions than anywhere in the world, was least desired in a vast country like India. Milder curbs on activities that could differ from state to state depending upon the intensity of the problem, would have been the right way with stress on social distancing and mask. Why should State of Sikkim, which has no case, and Mumbai, where impact was maximum should have been subjected to same restrictions ?. Again why should same restrictions apply to entire Maharashtra , what were desired in Mumbai.

Train and air services should not have been stopped rather these could have been continued or trimmed by observing social distancing norms. Same applies to intra state bus service, especially when we knew that in last 30 years there has been quantum jump in mobility of people, especially for employment and jobs. The very fact that Indian Railways ferries 20 million passengers everyday speaks about the mobility in India. Then not to forget that at any time, I million domestic tourists and twenty thousand foreign tourist are are on the move in different parts of the country. No thought was given as to how they would manage. This class silently absorbed the pain and shock.

If we look in retrospect, we may conclude that conditions never warranted **forcing lockdown at four hour Notice.** At that stage there were 500 cases and 11 deaths, today we have 3,20000 cases and almost 10000 deaths and are thinking of removing all restrictions. Therefore, at that stage we could

have safetly given 7 days notice and allowing trains to ferry stranded people.

Desperation of migrant labour had started showing its signs just when first phase was over. If government is allowing trains today when situation is far more worse, it could have done one month back. **Point is ,** government **erred at every stage and rather remained rigid and insensitive which cannot be appreciated.**

Industry and business should not have been closed but allowed by observing social distancing norms. If cleaning of cities could be continued with social distancing why not other operations. For example in Chandigarh around 2000 persons associated with cleaning can be seen on roads every day. Perhaps migration of labour would have been much less only if govt. had allowed industry and business to operate as it has done now after finding itself neck deep in financial trouble.

Govt departments, regulatory authorities should have continued with **less working days or less working hours by observing social distancing norms** and stress on online and video/ telephonic talks.

There should have been one particular hospital for Covid cases in a city or region and services in other hospitals should have been allowed for other diseases. Today most of the OPDs are closed and poor patients suffering from other equally fatal ailments have no access to right and cheap treatment. Death is a death whether it is from Crona or cancer or heart-failure. The number of people who died due to non availability of treatment, for other ailments is many times more than the ones who died due to corona.

Courts should have continued to function, video hearing has its limitation, even acknowledged by Apex court judges. It can be suicidal in any democracy to keep judicial remedies inaccessible to the common man for almost three months.

No state should have been allowed to seal its border. It harmed business, movement of people badly and they were compelled to move on foot which caused un-fathomed hardship to migrants and thousands died, perhaps more than crona casualities. This period will go down in the history of India as the worst period when it comes to hurting and damaging human dignity.

Prime Minister has to say for face saving that by this lockdown disaster was averted but fact is that it created biggest disaster since independence of the country. Truth is that he panicked and entire country, especially the poor and marginalized people are paying high price for that. Things became worse when he chose to implement his plans through the hand-picked bureaucrats. Situation was helped by the **Yes- men Ministers of BJP govt**, who have refused to apply their own minds and believe in only taking command

LESSONS

1 Strict Lockdowns have substantial costs and are hard to do in developing countries.

2 Locking down hot spots have a sense but locking down the entire country is a stupidity.

3 Social distancing with trimmed operations without stopping the things totally is a far better choice in terms of cost.

4 The Dharavi , Mumbai success tells that asking everybody to remain inside the house does not work. It may be good for the people having big house but can be counter productive for those who have large families staying in a small house or are staying in slum areas with large population density.

सम्पादकिय

भारत जैसे विशाल देश का नेता सोच विचारकर व परामर्श के साथ निर्णय लेने वाला होना चाहिय

पिछले 6 वर्ष में जिन दो निर्णयों ने भारत देश को सब से बड़ा नुकसान पहुंचाया व साथ में ही देश के बड़े वर्ग की रोजी रोटी पर लात मारी है वे हैं, नोटबन्दी व कोरोना महामारी को रोकने के लिये मार्च में लगाया गया देश व्यापी लोकडाउन। दूसरा निर्णय तो भारत की गरीब व आम जनता के लिये पहले से भी अधिक दुखदाइ सावित हो रहा है, ऐसे दिल को हिला देने वाले दृश्य सामने आये जिसका उदाहरण आजादी के बाद के पिछले 70 वर्ष में मिलना मुश्किल है। दोनों ही निर्णय माननिय प्रधानमन्त्री के अपने विवके से लिये जिन के लिये न तो सोच विचार किया गया था व न ही किसी से परार्मश लिया गया।

जहां तक लोकडाउन लगाने का सवाल है, अधिकतर का यह मानना है कि लोकडाउन तो लगाना ठीक था परन्तु जिस तरह से चार घंटे के नोटिस पर लोकडाउन लगाया गया और जिस प्रकार का लोकडाउन लगाया गया उस की कोई आवश्यकता नहीं थी व यही गरीब जनता को भारी भरकम माल व जान के नुकसान का कारण बना।

25 मार्च को जब लोकडाउन लगाया गया तो कोरोना महामारी के भारतवर्ष में 500 केस थे व इस महामारी से 11 व्यक्तियों की मृत्ये हुई थी, बहुत से प्रान्त जैसे सिक्किम है वहां तो इस वायरस का नाम भी नहीं था। इस के विपरीत पश्चिम के देशों में हाल बहुत अधिक खराब था। इसी तरह किसी भी प्रांत में एक दो शहरों में तो केस थे परन्तु बाकी शहरों में इस का नाम भी नहीं था। ऐसे में इस 130 करोड़ आवादी वाले व 32 प्रांतों व केंदिय शासित प्रदेशों वाले देश में सिंफ चार घंटे के नोटिस पर लोकडाउन की घोषणा करना समझ से बाहर है। भारत में किसी भी समय 50 लाख व्यक्ति घरों से बाहर यात्रा पर होते हैं, इन में बहुत सारे बिमार व वृध भी होते है। इसी तरह 30 हजार विदेशी प्रयटक भरत में किसी न किसी स्थान पर होते है। रेलगाड़ियों, हवाई यात्रा व बसों का लोकडाउन के साथ ही बन्द करते हुये यह भी विचार न किया गया कि इन सब का क्या होगा। लाखों विद्यार्थी अपने घरों से दूर दूसरे प्रांतो में पढ़ते हैं, तनिक भी विचार न किया गया कि इन सब का क्या होगा । परिणाम इन सभी को दो महीने तक तरह तरह की यातनायें सहन करनी पड़ी। परन्तु क्योंकि आज का मिडिया सरकार के पक्ष में बोलकर और लिखकर ही अपना सरवाईवल देखता है, किसी ने भी इन को उजागर नहीं किया। उसी तरह भारत में

प्रतिदिन 1500 के करीब व्यक्ति तपेदिक से ही मरते हैं, यही हाल बाकी बिमारियों का है, किसी ने यह नहीं सोचा कि यदि अस्पतालों के ओ पी डी ही बन्द हो जायेंगे व केवल कोरोना महामारी के मरीजों का ही ईलाज किया जायेगा तो अन्य बिमारियों वालें कहां जायेंगे। एक अनुभवी नेता से यह अपेक्षा कि जाती है कि वह अपने निर्णय से होने वालें परिणामों का जायजा लें व यह भी देखे कि गरीब ये गरीब व्यक्ति पर उसके निर्णय का क्या असर पड़ता है। उस में दूरदर्शिता होना आवश्यक है।यही कुछ गाप्रधी जी ने कहा था परन्तु गाधीं जी तो 2 अक्टूवर के दिन याद करने के लिये ही है।

अब बात करते हैं, घरों से बाहर काम कर रहे मजदेरों की। जब मोदी साहब ने लोकडाउन की धोषणा की तो यही कहा कि महाभारत 18 दिन चली थी यह लोकडाउन 22 दिन चलेगा, ऐसे में मजदूरों ने किसी भी तरह अपने मन को मना कर जो भी मुश्किलें थी उसको सहन कर लिया। परन्तु जब लोकडाउन को बढ़ाया गया तो उनके धैर्य की सीमा टूटने शुरू हो गई थी ऐसे में जब खाने की मुश्किल थी व मकानमालिक किराया मांग रहे थे व सब से बड़ी बात किसी भी तरह के यातायाता के साधन को खुलने की उमीद नजर नहीं रही थी, उन्होने पैदल की अपने घरों की और चलना आरम्भ कर दिया। जब लाखों मजदूर अपने छाटे बच्चों और औरतों के साथ सड़को पर पैदल जा रहें थे, सब का हृदय पिघल गया, सिर्फ सरकार का नहीं और सरकार अडिग रही व रेल गााड़ियों को खोलने से इन्कार कर दिया। मेरा प्रश्न यही है कि आज जब करोना पिड़ितों की संख्या 3 लाख है और रोज 300 आदमी मर रहें हैं तब को आप ने सब कुछ खोल रहें हैं तो जब संक्रमितों की संख्या केवल 30 हजार पहुंची थी तब इन मजदूरों के लिये रेल गाड़ियां क्यों नहीं चलाई गई। इस से बड़कर संवेदनहिनता का उदाहरण तो मुगलों और अंग्रेजों के शासनकाल में भी नहीं देखा गया।

आज भारत में कहने को भारतीय जनता पार्टी का शासन है परन्तु असलियत यह है कि आज हमारे देश में एक ही व्यक्ति का शासन है और वह हैं श्री नरेन्द्र मोदी। न तो उन्होने जब नोट बन्दी की थी तब किसी ने भी उनकी पार्टी में यह पूछने की हिम्मत की थी कि आपने यह कदम क्यों लिया जिसने की करोड़ों को वेरोजगार कर दिया, न ही उसके बाद जब कि रिजर्व बैंक के पास 99 प्रतिशत नोट बापिस आ गये तो किसी ने उनको यह कहने की हिम्मत की आपका निर्णय गलत साबित हुआ है और न ही आज किसी की हिम्मत है कि अपने नेता से यह कहे कि आपके

बिना विचार किये निर्णय ने करोड़ों मजदूरों को दर दर हजारों मील पैदल चलने पर विवश कर दिया जिस में कि हजारों अपनी जान खो बैठें। ऐसा लगता है कि भारतीय जनता पार्टी में चाहे मन्त्री हो, सांसद हो या पार्टी नेता सब का एक ही काम है कि मोदी साहब की गलतियों पर लेपा लेपी करो और उनकी छबि को धूमिल न हो देने दो। करोड़ों रूप्या इस बात पर खर्च किया जाता है। आज जो देश के हालात है उससे तो यही लगता है कि मोदी जी अगर एक हजार गलतियां भी कर लें तब भी वह इसी प्रकार बने रहेंगे। यह देश की मानसिक गुलामी की निशानी है।

परन्तु भाजपा की यह निती पार्टी के विनाश का कारण बन सकती है। यह वही हालत है जो कि कांग्रेस पार्टी की पिछली सदी के आठवें दशक में थी। इन्दिरा गांधी की भी इसी तरह पूजा होती थी परन्तु उसकी मृत्यु के बाद पार्टी में ऐसा नेता नहीं था जो कि स्वभाविक रूप से नेतृत्व सम्भाल सके या जिसे नेतृत्व दिया जा सके। अच्छा होगा पार्टी श्री मोदी से उनके द्वारा लिये गये निर्णयों के लिये उन्हें कटघरे में खड़ा करे और उन्हें जिम्मेवार ठहराय। यही नहीं श्री मोदी को भी ऐसा लगे कि उनकी असफलता के लिये उनको हटा कर किसी दूसरे व्यक्ति को भी लाया जा सकता है। भाजपा यदि ऐसे नहीं करती है तो उसका भी वही हाल निश्चित है जो कि आज कांग्रेस का हैं,। जब मैं श्री मोदी व भाजपा का हाल देखता हूं तो मुझे एक कवि की यह पकिंतयां याद आती है।

King is never wrong

The King is never wrong
Everything is in His time
The whole world just sees it
As devoid of reason or rhyme

The world is His oyster
All must bend to His will
His family- His friends
Exist for His Thrill

'Future economic security' to the informal sector will serve greater purpose than any other package.

It is real irony that those who generate taxes have to remain without wages

Covid-19 has answered one puzzle ---why in India job means gov. job and why any govt. department in India receives applications in lacs including those of PhD's, engineers and MBA's for any class four government job.

It is not only millions of migrant workers but, lacs of graduates, post graduates , employed as staff and in Supervisory cadre in small Private concerns , who lost jobs during Covid-19 induced lock down. Then there are many who are gripped by uncertainty with regard to continuity of their jobs especially in the hospitality and tourism sector. In the face of this, even non essential employees in the Centre and State governments offices, Universities and other institutions continued to get salary without having to attend duty. The ferocious sense of entitlement these state sector employees have developed over the years was evident when they protested even the temporary freeze of the two DA installments. I believe that after reading this , one won't blame those PhD and MBA's engineering graduates if they are seen competing for the class IV job.

The big question is ---are these self-employed and associated with the informal sector, not working for the country and its growth ? The fact is that it is they who are the engine of a country's economic growth and generate revenue and corresponding taxes in the form of GST, VAT and other direct and indirect taxes which are largely used for maintaining the government. employees in the Centre and states. **But irony is that when any adversity befalls they have to remain without wages while their counterpart in govt. continue to get full salary/wages , as it happened during Covid-19.**. Condition of Millions of workers engaged mostly in micro units or self employed was worse than that of the refugees **in their own country.**

The most important revelation that the Covid -19 has made is that if these millions in the informal sector do not work and generate revenue and corresponding taxes like GST/VAT etc, it may not be possible to pay salary and hefty pensions to the privileged state employees. As of now , if the economy does not pick up in the next quarter many states may find it difficult to foot their salary bills. Fortunately, now this realization is slowly creeping in that you can't ignore this class anymore. It is for this reason that many state governments are trying to stop them from moving back to their home.

Lesson isthose working in the informal sector and remained ignored so far have to be given their due . Sooner we realize better it is for the country's economy and social harmony. In the last 70 years , through various legislations we took care of organized workers, especially in PSU's but the informal sector has drawn the public attention for the first time during this epidemic. The need of the hour is that the big chasm that exists between the Service conditions of the two categories i.e. state

employees and those associated with non-state institutions is bridged and the most important factor **is the economic security to this class** in the event of their losing employment. Group A employees both in Private as well as Govt sector are excluded in this draft as they are better equipped to deal with uncertain situations.

This is possible only when the government. considers every person working for the Indian economy as its own employee , whether it is a farmer, or worker employed in a small scale unit or a teacher in the private school or self employed artisans or an Executive in the govt or an army man saving the borders. Everyone is important and no one is less or more important when it comes to keeping the wheels of our economy moving.

The said economic security of the employee or self employed has to be the responsibility of the government, even if he is not its direct employee. Reason being that private enterprise employers are paying GST , VAT and other direct taxes to the government. **In return the government owes something to those who generate and pay these taxes**. This economic security can be in the form of full salary for first 6 months and 50% salary for next six months in the event of Covid -19 like situation or when the employee loses employment due to reasons like winding up of the company, lay off, suspension of company's operations due to any of the reasons, which now happens very often and is beyond the control of the employee and sometimes beyond the control of the private enterprise also.

The ultimate objective is that they should not feel starved as it happened now and should not be at the mercy of NGO's and other social organizations even for food, as they are experiencing today. **Again, a packet of food is not the only thing they need. They are humans and have other needs as the middle class has. "Just think about the calls given by our PM and few Chief Ministers to the citizens----"don't let them go hungry, do not charge rent from them." Such calls do not impart dignity to our working class who keep the wheel of the economy moving. Why can't the government ensure that they have food and shelter in difficult times. Why should the government pass on this responsibility to NGO's and other socio-religious organizations when right to food is a fundamental right , a view taken by National Human Rights Commission as well as Hon'ble Supreme Court. No developed country treats the working class so shabbily this, as we witnessed in India, during the last two months.**

Government can ensure this security by providing insurance cover to the employees of this class by retaining 20% of the GST and other direct collections for this purpose. Any employee or the self employed simply needs to get himself registered with the government , either himself or through the employer.

As a second step, the government needs to make family pension reasonable enough to provide subsistence to the retired private sector employees. It is a real shame that a Private sector employee covered under EPF gets a maximum family pension Rs 1200 odd PM with no further provision of increase whereas even a peon in govt , after his retirement gets a pension of minimum Rs 30000 plus assured 12% increase every year and a bonanza of few lacs comes to him when the new pay commission report is implemented. Even the old age pension is more than Rs 2000 PM in many states.

But this is also a fact that when Govt. uses 20% of GST and other direct and indirect taxes to meet this informal sector commitment then it may find difficult to meet the salary and

pension bill of the government employees. But, then the government has to take many unpleasant decisions after twenty five years of benevolence towards its employees. There is enough scope in all the departments including defence.

Otherwise also reducing the salary bill has become necessary in the woke of Covid-19. From 1996 onwards the economy witnessed upward increase which enabled the Government to meet burgeoning salary/pension bills. But now at least for the next one decade the world economy that includes India , will only shrink but not expand**(except with China as they are totally in a different mould.)** the government can't afford to continue with liberal provisions of various service commissions. **These will have to be reviewed. Then we need to keep in mind that** with the spread of education and corresponding awakening , those working in the informal sector would refuse to be exploited anymore and justifiably ask for their due from the government. Third, it is very important that everyone doesn't see his salvation in the government. job. Government cannot have so many jobs. Therefore, the solution lies in making private/informal sector jobs equally satisfying and to achieve this the most important factor is future economic security.

Covid-19 has sent a warning and provided a much needed opportunity to do balancing act. Government can't afford to indulge in social injustice in any democracy for a long time. If it continues, huge upspring or unrest can't be ruled out which India can't afford. Though our Constitution speaks loudly of social justice and that includes economic justice too and we have Apex courts and High Courts to protect the constitutional provisions but it is the social injustice in its worst form that is being practiced by our Government.

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

विश्वाम अनाहुतिम

,इसका अर्थ है कि हमारी भावना अयज्ञीय न हो अर्थात हम कृतघन न बनें खास कर उस परमेश्वर के प्रति जो हमें प्राण देता है, जीवन के सब साधन देकर पालता है और रक्षा करता है। उसका स्मरण करना न भूलें क्योंकि जो भी इस सृश्टि में दिखाई दे रहा है वह उसी की देने है। इसी तरह हम अपने देवों के प्रति भी कृतज्ञ रहें । कोन है वे देव ? दन देवों में सब से उपर माता पिता का स्थान है। क्या उस मां के उपकार को भूलाया जा सकता है, जिसने हमें 9 माह तक अपनी कोख में रखा और जन्म देते ही भरपूर प्यार दूलार दिया, अपने सुख का त्याग देकर हमें पाला।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

संबंधों के नाम पर एक दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक बनना ठीक नहीं

सीताराम गुप्ता

कई लोग रिश्तों को निभाने में बहुत संवेदनशील होते हैं। उनकी अति संवेदनशीलता कई बार समस्याएं भी उत्पन्न कर देती है। आज विशेश रूप से षहरों में छोटे परिवारों का चलन हो गया है। बदलते समय में आज बहुत सी पुरानी बातें अथवा मान्यताएं अप्रासंगिक हो गई है। इसके बावजूद कई लोग आज भी संयुक्त परिवारों को ज्यादा महत्त्व देते हैं। इसके पीछे उनकी कोई दुर्भावना नहीं होती अपितु परिवार को एकजुट बनाए रखने की इच्छा ही होती है। आज की नई पीढ़ी ये बंधन स्वीकार करने को तैयार नहीं होती। उनके अपने उचित कारण भी हैं। कई बार कई घरों में नव–विवाहित दंपतियों को विवाह के कई–कई वर्शों बाद भी अपेक्षित व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं मिल पाती। उनके जीवन में अत्यधिक हस्पक्षेप के कारण भी बहुत सारी समस्याएं विकसित हो जाती हैं और परिवार में विवाद अथवा कलह का कारण बन जाती हैं। एक घटना याद आ रही है।

कई साल पुरानी बात हो गई। एक रिश्तेदार का फोन आया। उम्र में मुझसे बहुत बड़े हैं। वैज्ञानिक हैं। राश्ट्रपति के सलाहकार रह चुके हैं। इतने सीधे व सरल स्वभाव के हैं कि वर्णन करना मुश्किल है। कहने लगे भई छोटे वाली पुत्रवधु की तबीयत बहुत खराब है। जब मैंने पूछा कि क्या बीमारी है तो कहने लगे कि पता ही नहीं चल रहा। मैंने कहा कि घर में दो दो डॉक्टर हैं आ जाओ किसी दिन। घबराने की कोई बात नहीं इलाज हो जाएगा। ये सुनकर कहने लगे कि वो न ढंग से खाती–पीती है न काम ही करती है बस एक ही रट लगा रखी है कि मुझे अलग होना है। मैंने कहा कि आप सब लोग किसी दिन घर आ जाओ इस समस्या का भी कुछ न कुछ समाधान अवश्य निकलेगा। बच्चों से पूछकर समय निष्चित कर दिया। दो या तीन दिन के बाद सब लोग घर आए। जलपान के उपरांत उनकी पुत्रवधु की अच्छी तरह से जांच की। बड़ी नहीं कोई मामूली सी समस्या थी। उसके लिए अपेक्षित दवाएं दे दीं।

उसके बाद उन्होंने वही अलग होने वाला मुद्दा उठा दिया। मैंने पूछा कि आप क्या चाहते हो?उन्होंने कहा कि मैं तो यही चाहता हूं कि पूरा परिवार इकट्ठा रहे। पर अलग होने में भी क्या बुराई है ये पूछने पर वे चुप हो गए। वास्तव में ये उनका अतिशय प्रेम ही था जो परिवार के किसी भी सदस्य को अलग होने से उन्हें परेशानी हो रही थी। घर में किसी मुद्दे को लेकर कोई विवाद भी नहीं था। लेकिन कई बार अतिषय प्रेम भी बंधन जैसा ही हो जाता है जिसे स्वीकार करना मुश्किल हो जाता है। उन्हें समझाया कि सभी भाई कभी न कभी अलग होते ही हैं। कभी हम दोनों भाई भी अलग हुए थे और आप भी दोनों भाई अलग हुए थे। इन्हें भी आज नहीं तो कल अलग होना ही है। सारे लड़के वैसे भी अपना अलग–अलग काम कर रहे हैं और सबका काम अच्छा चल रहा है। यदि इन्हें संयुक्त परिवार में बंधन महसूस हो रहा है अथवा परेशानी आ रही है तो इस स्टेज पर अलग होने में कोई बुराई नहीं। बड़ा घर है सब एक एक फ्लोर पर आसानी से रह लेंगे। बाद में जैसा होगा देखा जाएगा।

बात उनकी समझ में आ गई। भोजनादि से निवृत होने के बाद दवाएं समय पर लेने की हिदायत के साथ सब विदा हो गए। इसके दस–बारह दिन बाद उनका फोन आया। बहुत खुश लग रहे थे। पुत्रवधु के स्वास्थ्य के बारे में पूछने पर कहा कि वो एकदम ठीक है। उन्होंने बताया कि दो दिन बाद ही उन्होंने पुत्रवधु को अलग रहने की इजाजत दे दी थी। वो तो चार–पांच दिन में ही बिल्कुल ठीक हो गई और अब दवाएं भी नहीं ले रही है। मैंने जब उनसे पूछा कि पुत्रवधु के अलग होने से आपको कैसा लग रहा है तो कहने लगे, ''मुझे तो कुछ खास फर्क नहीं पड़ा बल्कि बहू को खुष देखकर अच्छा ही लग रहा है। वो तो पहले से भी अच्छी तरह से पेष आती है सबसे।''

वास्तव में हर व्यक्ति को एक निष्चित स्वतंत्रता चाहिए। जब तक उसे वो स्वतंत्रता नहीं मिल जाती उसके व्यक्त्वि का समग्र विकास संभव नहीं। किसी को स्वतंत्रता चाहिए तो किसी को सम्मान चाहिए। किसी को हम कितनी ही सुविधाएं क्यों न देते हों, किसी से हम कितना ही प्रेम क्यों न करते हों, किसी के लिए हम कितने ही चिंतित क्यों न हों यदि हम उसे अपेक्षित स्वतंत्रता अथवा सम्मान नहीं देंगे तो हमारी दी गई सुविधाएं और हमारा प्यार किसी काम का नहीं। ऐसा प्यार, अपनत्व, देखभाल और चिंता ही बंधन बनकर समस्या उत्पन्न करने लगते हैं। जिस प्रकार से घर के सभी सदस्यों को रहने और काम करने के लिए पर्याप्त स्थान चाहिए उसी प्रकार से हर सदस्य को अपने ढंग से काम करने की छूट मिलनी चाहिए। जब बच्चे बड़े होने लगते हैं तो उनको भी पर्याप्त स्पेस मिलना चाहिए। उनकी सहमति के बिना उन पर कोई भी निर्णय थोपना नुकसानदायक सिद्ध होता है।

कार्य स्थल पर भी यही होता है। यदि हम लोगों को उनकी इच्छा के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता और सम्मान देते हैं तो वे अपेक्षाकृत अधिक अच्छे परिणाम देने लगते हैं। कई लोग बंधन में बिल्कुल भी कार्य नहीं कर सकते जबकि स्वतंत्र रूप से वे बहुत अच्छा कार्य कर सकते हैं। बंधन के कारण कई लोगों की रचनात्मकता विकसित ही नहीं हो पाती। कई लोगों को दूसरों की उपस्थिति में कार्य करने में संकोच होता है अतः ऐसी अवस्था में वे ठीक से कार्य नहीं कर पाते। ऐसे लोगों के सही विकास के लिए उन्हें उनके व्यक्तित्व के अनुरूप स्वतंत्रता व अलग से स्थान प्रदान करना अनिवार्य हो जाता है अन्यथा वे बहुत पिछड़ जाएंगे। बाद में सब सामान्य हो जाते हैं।

यही बात मित्रता व अन्य संबंधों के विशय में भी कही जा सकती है। हर रिश्ते में एक अपेक्षित दूरी व एक दूसरे की स्वतंत्रता अनिवार्य है। जैसे ही उस दूरी का अतिक्रमण होता है अथवा स्वतंत्रता में बाधा उत्पन्न होती है संबंधों में

खटास आनी अथवा दरार पड़नी प्रारंभ हो जाती है। दोस्तों, रिश्तेदारों अथवा अन्य परिचितों से हमारा मिलना–जुलना अथवा आना–जाना एक सीमा में होना चाहिए। रोज–रोज का मिलना–जुलना अथवा आना–जाना भी प्रेम को समाप्त कर डालता है। कोई यदि इस सीमा रेखा को पार करे अथवा हमारे पर्सनल स्पेस में अतिक्रमण करने का प्रयास करे तो हमें इषारों इषारों में ही सही पर कह देना चाहिए कि मुझे ये सब पसंद नहीं। कई लोग कुछ रिष्तों में गलत छूट लेने का प्रयास करते हैं उन्हें बिना देर किए समझा देना चाहिए और अच्छी तरह से समझा देना चाहिए।

यदि हम समय पर सही बात नहीं कहते हैं तो बाद में कड़े षब्दों में कहना पड़ता है जिससे संबंधों में पूरी तरह से विघटन की स्थिति आ सकती है। जो लोग संबंधों का दुरुपयोग करने से बाज नहीं आते उनसे लंबी दूरी बनाकर रखना ही ठीक रहता है। जो लोग किसी भी तरह से नहीं मानते उनसे संबंध तोड़ लेने में भी कोई बुराई नहीं। यही बात स्वयं पर लागू करना भी अनिवार्य है। यदि हम चाहते हैं कि सबसे हमारे संबंध हमेशा मधुर व आत्मीय बने रहें हमें स्वयं हर रिश्ते की मर्यादा निश्चित कर लेनी चाहिए। यदि कहीं पर हमारी उपेक्षा प्रारंभ हो गई हो तो हमें जान लेना चाहिए कि या तो हम रिष्तों की सीमा का अतिक्रमण कर रहे हैं अथवा अब पहले की तरह संबंधों का निर्वाह करना संभव नहीं होगा। इसके भी कई कारण हो सकते हैं। कोई विवशता हो सकती है। यदि भविश्य में संबंधों का निर्वाह करना असंभव लग रहा हो तो इस स्थिति को स्वीकार कर लेना ही श्रेयस्कर होगा।

समय अथवा परिस्थितियां बदल जाने पर संबंधों की सीमा रेखा का पुनर्निर्धारण करने में ही समझदारी है।

सीताराम गुप्ता
ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323
Email: srgupta54@yahoo.co.in

ईश्वर के अर्धम को खत्म करने के अपने ही ढंग है।

क्हते हैं ईश्वर ने मिस्र देश की जनता के उपर पलेग बिमारी के सात आक्रमण किये और आखिर वहां के अंहकारी राजा जिसका नाम फारोह था, उसे किसी सन्त के कहने पर इजराईल के लोगो जिन्हें उसने बन्धक बना कर रखा था, मुक्त करना पड़ा व इस तरह मिस्र की जनता को पलेग में ं को जैसी जानलेवा बिमारी से छुटकारा मिला।

अच्छा हो यदि आप लेखक हैं तो रसकिन बोंड की इस बात को याद रखें

क्या आप चाहते हैं कि आप के पाठक को आप का लिखा पढ़ते समय पसीना आ जाये या वह चिड़चिड़ा हो जाये क्योंकि आप का लिखा उसे समझ नही आ रहा, यदि नही ंतो आसान भाषा में लिखने की आदत डालें।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

NAMRATA SONI CELEBRATED HER BIRTHDAY WITH NGO CHILDREN COPY

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Kanwal kanta Sehgal

Krishna Chaudhary

Prem Prakash Chopra

Santosh Aggarwal

Sudarshan Kapoor

Vijay Kumar Punj

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।
Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870